DR. RANJEET KUMAR
Deptt. Of History
H. D. Jain College Ara
M.A , sem.- 2, CC-6, unit-5

शीतयुद्ध की उत्पत्ति एवं अभिव्यक्ति (Origin and manifestation of Cold War)

1. परिचय: शीत युद्ध क्या था?

शीत युद्ध (Cold War) द्वितीय विश्व युद्ध (Second World War) के बाद 1945 से लगभग 1991 तक विश्व की दो महाशक्तियों — संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) और सोवियत संघ (Soviet Union) के बीच चलने वाला दीर्घकालिक राजनीतिक, वैचारिक, आर्थिक और सैन्य तनाव था। इस संघर्ष को 'शीत' इसलिए कहा गया क्योंकि यह प्रत्यक्ष युद्ध जैसा नहीं था — दोनों पक्षों ने सीधे एक दूसरे से युद्ध नहीं किया, लेकिन व्यापक प्रतिस्पर्धा और संघर्ष हर क्षेत्र में जारी रहा।

शीत युद्ध का प्रभाव केवल यूरोप तक सीमित नहीं रहा; यह पूरे विश्व के राजनीतिक ढांचे और किसी भी क्षेत्र के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करता रहा। संयुक्त राज्य अमेरिका पूंजीवाद (Capitalism) और लोकतंत्र का पक्षधर था, जबकि सोवियत संघ साम्यवाद (Communism) और एक केंद्रीकृत एक-दक्षिणतंत्र (Totalitarian) शासन प्रणाली का समर्थन करता था।

2. शीत युद्ध की अवधारणा और शब्द का अर्थ

"शीत युद्ध" शब्द का प्रयोग सबसे पहले युद्ध बाद की स्थितियों का वर्णन करने के लिए अंग्रेज़ लेखकों और राजनीतिक सलाहकारों ने 1945 के आसपास किया। यह उस प्रकार के युद्ध को व्यक्त करता था जिसमें प्रत्यक्ष हिंसा या युद्ध की अपेक्षा दोनों पक्षों के बीच तनाव, अविश्वास, राज़नीतिक और आर्थिक प्रतिस्पर्धा अधिक थी।

शीत युद्ध यह नहीं बताता कि युद्ध पूरी तरह से शांत था, बल्कि यह कहता है कि यह प्रत्यक्ष हथियारयुद्ध के बजाय दीर्घकालिक संघर्ष, अंतरराष्ट्रीय मानसिक संघर्ष और वैचारिक टकराव का युग था।

3. शीत युद्ध क्यों शुरू हुआ? — मूल कारण

शीत युद्ध की शुरुआत केवल द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में नहीं हुई थी; इसके मूल कारण कई दशक पहले विकसित हुए थे। इसके मुख्य कारण निम्न हैं:

(1) विचारधाराओं का टकराव

दूसरी विश्व युद्ध के पहले ही पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच वैचारिक मतभेद गहरे थे। साम्यवाद एक श्रमिक-आधारित समाज और राज्य नियंत्रण वाली अर्थव्यवस्था चाहता था, जबकि पूंजीवाद निजी उद्यम, मुक्त बाजार और स्वतंत्र राजनीति का समर्थन करता था।

(2) रूस और पश्चिम के बीच ऐतिहासिक अविश्वास

1917 में रूस में साम्यवादी क्रांति के बाद वेस्टर्न देशों और सोवियत संघ के बीच अविश्वास बढ़ा। युद्ध के दौरान यूएसएसआर और पश्चिमी शक्तियों का गठबंधन अस्थायी था, लेकिन युद्ध के बाद यह अपनी वास्तविक पहचान दिखाने लगा।

(3) यूरोप के पुनर्निर्माण और सत्ता का विभाजन

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप का पुनर्निर्माण एक बड़ा मुद्दा बन गया। सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारें स्थापित करें ताकि भविष्य में जर्मनी जैसे खतरे से बचा जा सके। अमेरिका ने पश्चिमी यूरोप को आर्थिक सहायता देने के लिए मार्शल योजना की घोषणा की।

(4) परमाणु हथियारों की दौड़

अमेरिका ने 1945 में पहला परमाणु बम इस्तेमाल किया। इसके बाद सोवियत संघ ने भी परमाणु हथियार विकसित करना शुरू किया जिससे युद्ध-उत्तेजना और बढ़ी और दोनों महाशक्तियों के बीच हथियार दौड़ (Arms Race) की शुरुआत हुई।

4. शीत युद्ध का उभरना — 1945 से 1949 तक

(A) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की स्थिति

नाज़ी जर्मनी के पराजित होने के बाद अमेरिका और सोवियत संघ के बीच सहयोग धीरे से टूटने लगा। युद्ध के दौरान दोनों शक्तियों ने मिलकर जर्मनी को हराया, लेकिन जीत के बाद दोनों का लक्ष्य अलग-अलग हो गया।

सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप में लाल सेना के नियंत्रण वाले देशों में साम्यवादी सरकारों को स्थापित किया, जिससे पश्चिमी यूरोप में चिंता बढ़ी कि सोवियत संघ यह क्षेत्र स्थायी रूप से अपने प्रभाव में रख रहा है।

वहीं दूसरी ओर अमेरिका ने यूरोप को आर्थिक और राजनीतिक रूप से मजबूत करने की कोशिश की जिसका मुख्य उद्देश्य साम्यवाद को फैलने से रोकना था।

(B) ट्रूमैन डॉक्ट्रिन (March 12, 1947)

अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन ने 1947 में ट्रूमैन डॉक्ट्रिन की घोषणा की जिसमें अमेरिका ने सभी देशों को समर्थन देने की नीति अपनाई, खासकर उन देशों को जो साम्यवादी शासन के प्रभाव से खतरे में थे। यह नीति साम्यवाद के फैलाव को रोकने (Containment) की रणनीति थी।

ट्रूमैन डॉक्ट्रिन ने स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका शीत युद्ध में सक्रिय रूप से शामिल होने जा रहा है।

(C) मार्शल प्लान (Marshall Plan, 1948)

मार्शल प्लान अमेरिका की वह आर्थिक सहायता योजना थी जिसके तहत पश्चिमी यूरोप के देशों को युद्ध-बाद आर्थिक मदद दी गई ताकि उनकी अर्थव्यवस्थाएँ मजबूत हों और वे साम्यवाद के प्रभाव में न आएँ।

सोवियत संघ ने इस योजना को अमेरिका का प्रभाव बढ़ाने का हथियार माना और इसे अस्वीकार कर दिया।

(D) बर्लिन ब्लॉकेड और एयरलिफ्ट (1948-1949)

बर्लिन को लेकर एक बड़ा संघर्ष हुआ जब सोवियत संघ ने पश्चिमी शक्तियों द्वारा नियंत्रित पश्चिमी बर्लिन तक पहुँच को रोक दिया। अमेरिका और उसके सहयोगियों ने हवाई मार्ग से आपूर्ति भेजकर बर्लिन को सहायता दी। यह संघर्ष शीत युद्ध का पहला बड़ा सैन्य-राजनीतिक मोड़ माना जाता है।

इस घटना ने दिखाया कि दोनों पक्ष बिना प्रत्यक्ष युद्ध किए भी कितना संघर्ष कर सकते थे।

(E) नाटो (NATO) का गठन (1949)

1949 में नाटो (North Atlantic Treaty Organization) की स्थापना हुई। यह एक सैन्य गठबंधन था जिसमें अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगियों ने मिलकर सोवियत संघ के खिलाफ सुरक्षा नीति अपनाई।

5. शीत युद्ध की शुरुआती दशा — 1950 के दशक

(A) परमाणु हथियारों का बढ़ता खतरा

सोवियत संघ ने 1949 में अपना पहला परमाणु बम सफलतापूर्वक परीक्षण किया जिससे दोनों पक्षों की परमाणु शक्ति एक-जैसी हो गई।

(B) कोरिया युद्ध (1950-1953)

कोरिया के विभाजन से दोनों पक्षों के बीच संघर्ष स्थापित हुआ। उत्तरी कोरिया को सोवियत-चीन समर्थन मिला और दक्षिणी कोरिया को अमेरिका-पश्चिमी सहायता। इससे कोरिया युद्ध शुरू हुआ जो सीधे शीत युद्ध का ही अंग था।

यह युद्ध सिद्ध करता है कि शीत युद्ध की प्रत्यक्ष लड़ाई नहीं थी, बल्कि प्रतिनिधि युद्धों (Proxy Wars) के रूप में जंगें लड़ी जा रही थीं।

(C) द्विध्रुवीय विभाजन (Bipolar World Order)

1950 के दशक तक विश्व दो ध्रुवों — पूंजीवादी और साम्यवादी — में विभाजित हो गया था। अमेरिका नाटो का नेतृत्व कर रहा था जबकि सोवियत संघ वार्सा संधि (Warsaw Pact) के ज़रिये पूरब यूरोप के देशों को अपने ब्लॉक में रख रहा था।

6. शीत युद्ध का चरम — 1960 का दशक और क्यूबा मिसाइल संकट

शीत युद्ध के दौरान सबसे तनावपूर्ण घटना 1962 में क्यूबा मिसाइल संकट थी। इसमें सोवियत संघ ने अमेरिका के पास क्यूबा में परमाणु मिसाइलें तैनात की थीं और अमेरिका ने इसे अपना सीधा खतरा माना।

यह संकट इतना गंभीर था कि दोनों पक्षों के बीच परमाणु युद्ध के कगार तक पहुंचने का खतरा पैदा हुआ, लेकिन बातचीत के बाद दोनों पक्ष पीछे हटे।

इस घटना ने दिखाया कि शीत युद्ध अब वैश्विक स्तर पर परमाणु क्षमता के प्रभाव से कितना खतरनाक हो गया था।

इस संकट के बाद अमेरिका और सोवियत संघ ने कुछ नियंत्रण और विश्वास-निर्माण उपाय अपनाए, जैसे न्यूक्लियर टेस्ट-बैन संधि (Nuclear Test-Ban Treaty) पर 1963 में हस्ताक्षर।

7. विश्व में शीत युद्ध का विस्तार

शीत युद्ध केवल यूरोप तक नहीं रहा। यह अफ़्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और अन्य भागों में भी फैल गया जहां दोनों महाशक्तियाँ अपनी नीतियों को लागू करने लगीं:

(A) वियतनाम युद्ध (Vietnam War)

अमेरिका ने दक्षिण वियतनाम को सपोर्ट किया, जबकि उत्तरी वियतनाम को सोवियत संघ और चीन ने समर्थन दिया।

(B) मध्य पूर्व में संघर्ष और समर्थन

दोनों पक्षों ने मध्य पूर्व में अपने समर्थन वाले देशों को सहायता दी ताकि राजनीतिक नियंत्रण हासिल किया जा सके।

8. शीत युद्ध का अंत

शीत युद्ध का अंत धीरे-धीरे 1980 के दशक में शुरू हुआ जब सोवियत संघ में मिखाइल गोर्बाचेव नेतृत्व आया और ग्लास्नोस्त और पेरोस्ट्रोइका जैसी नीतियाँ लागू कीं, जिससे खुलापन और सुधार पैदा हुआ।

1989 में जब पूर्वी यूरोप के देश अपने शासन ढांचे बदलने लगे और 1991 में सोवियत संघ खुद टूट गया, तब शीत युद्ध का अंत हुआ।

9. शीत युद्ध का वैश्विक प्रभाव

शीत युद्ध का प्रभाव बहुत व्यापक रहा:

(A) सामरिक और सैन्य प्रतिस्पर्धा

दोनो पक्षों में हथियार दौड़ और इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM) जैसी तकनीकों का विकास हुआ।

(B) अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

पूरे विश्व में सैन्य खर्चों और रक्षा-उद्योगों का विस्तार हुआ जिससे अर्थव्यवस्थाएँ प्रभावित हुईं।

(C) सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

दोनों ब्लॉक ने अपनी विचारधाराओं को फैलाने के लिए प्रचार-प्रसार किया और यह आम जनता पर भी असर डालता रहा।

10. निष्कर्ष

शीत युद्ध एक लंबी, जटिल और वैश्विक प्रतिस्पर्धा थी, जिसमें प्रत्यक्ष युद्ध न होते हुए भी राजनीति, अर्थव्यवस्था, सैन्य नीति और विचारधारा सभी स्तरों पर अमेरिका और सोवियत संघ के बीच संघर्ष जारी रहा। इसके परिणाम आज भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महसूस होते हैं।

शीत युद्ध ने विश्व के भूराजनीतिक ढांचे को बदल दिया, वैश्विक शक्ति संतुलन को पुनः व्याख्यायित किया और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की दुनिया को पूरी तरह से प्रभावित किया।